

या हुसैन या वारिस अल मद्द
दास्तान -ए-वारिस पाक
आजम अल्लाहु जिकरहु

लेखक
सुल्तान वारिस वारसी
ऊसराहार (इटावा) 206123
उत्तर प्रदेश

औलिया अल्लाह के नामों में एक नाम हजरत अशर्फुल
 आलमीन वारिस ए पंजतन सैयद वारिस अली शाह
 रजि अल्लाह ताआला अन्हु का है आप की शान
 निराली है आपका मकाम व शान बयान करना मुहाल है
 कुछ मुक्तसर से लफ्जों में लिख रहा हूं आपकी हर शैय
 गुलाम थी चरिन्द परिन्द मछलियां जिन्नात सभी आपके
 तांबे थे आपका मर्तबा अल्लाहुअकबर
 अल्लाह और रसूल ने आपको 19वीं सदी के वर्षेशगीर
 के मुसलमानों की हिदायत का काम सौंपा हजरत
 सैयद वारिस अली शाह के आवा और अजदाद का
 ताल्लुक ईरान के नीशापुर से है आपके अजदाद
 हिन्दुस्तान आये रसूलपुर के कतूर की सर जमीन को
 अपना वतन बना लिया

इसी खानदान के एक फर्द हजरत अब्दुल अहद रजिअल्लाहु
 तआला अन्हु चले जो देवा शरीफ में आकर जल्वागर हुए
 इन्ही की 4वीं पुस्त में सैय्यद कुर्बान अली शाह रह० तशरीफ
 लाए और यहां के जमीदार बने आप सूफी मन इंसान थे आप
 हकीम भी थे आप बगदाद के इल्मी मरकज से फारिग और
 तहसील थे आपके यहां 19वीं सदी में हजरत अब्दुल अहद
 की 5वीं पुस्त और हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की
 26वीं पुस्त में हजरत सैय्यद वारिस अली शाह रजिअल्लाहु
 तआला अन्हु की विलादत हुई

सन 1 रमजान 1232 हिजरी बाज रिबायत में 1238 हिजरी
 में तसरीफ लाए

बचपन में ही आपके वालिद गिरामी हजरत कुर्बान अली
 शाह रजि० दुनियां से तसरीफ फरमा गये कम उम्र में ही
 आपकी वालिदा मोहतरमा भी रहलत फरमा गई

आपकी परवरिश और तालीम और तरबियत का भार आपकी दादी जान के कांधों पर आ गया आपकी तरबियत चचा मुकर्म अली सहाब ने फरमाई 7 साल की उम्र शरीफ में आपकी दादी जान भी रहलत फरमा गई फिर आपकी तरबियत हज़रत खादिम अली सहाब के निगरानी में आ गई

जब आपको इल्म का दर्स दिया गया कुरान पढ़ाया गया तो आपने 5 साल की उम्र में कुरान पढ़कर सुनाया उनको पढ़ाने वाले बड़ा हैरान हुए मैं भला इनको क्या पढ़ाऊं इये खुद हाफिज ए कुराआन हैं अल्लाहु अकबर आप पैदाइशी ही हिफज ए कुरान थे

15 साल की उम्र में आपने हज करने का इरादा किया आप अजमेर शरीफ उर्स में शिरकत की और फिर हज को रवाना हुए आपने 17 हज की हैं आपने कम उम्र में ही अरब मिस्र तुर्की यूरोप ईरान इराक हर जगह सफर किया और दिन का परचम लहराया। आपकी करामाते भी शुमार हैं....

हजरत वारिस पाक आजमअल्लाहु जिकरहु आप
 कम उम्र से ही सुकून के मुतलआशी थे शहर के
 हंगामे और गहमागहमी से दूर रहते और जंगलों
 वीरानों और बियाबानों में जा निकलते जहां पर
 आपके जज्बात परवान चढ़ते हजरत वारिस
 अली शाह रजिअल्लाहु तआला अन्हु के बहनोई
 हजरत खादिम अली शाह रह० लखनऊ में मुकीम
 थे उन्होंने आपकी रुहानी तालीम और तरबीयत
 फरमाई हजरत वारिस अली शाह जब 14 साल के
 थे तब हजरत खादिम अली शाह रह० भी रुखसत
 हो गए और हजरत सरकार वारिस अली शाह
 रजिअल्लाहु तआला अन्हु उनके जांनसीन करार
 पाए

एक रात ख्वाब में हजरत सरकार वारिस अली शाह
रजिअल्लाहु ताआला अन्हु को हजरत खादिम अली
शाह रह० ने आपको सफर करने का हुक्म दिया हुक्म
मिलते ही हजरत सरकार वारिस पाक रजिअल्लाहु
तआला अन्हु ने सफर का इरादा किया और रवाना हो
गए सरकार वारिस पाक देवा शरीफ से जयपुर और
फिर अजमेर तशरीफ लाए सुल्ताने हिंद हजरत ख्वाजा
मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रजिअल्लाहु ताआला अन्हु के
आस्ताने पर हाजिरी दी वहां से मुंबई गए 1253 हिजरी
में आप मक्का मौज्जमा पहुंचे और फरिजा ए हज
अदा किया फिर मदीना शरीफ रसूले करीम सल्लल्लाहु
अलैहि व वसल्लम के मजार अकदस पर हाजिर हुए
कुछ अरसा रहे बहां पर कुछ अरसा गुजारने के बाद
आप फिर वहां से सफर पर रवाना हुए

आप लगभग 12 बरस तक सफर में रहे इस दौरान आपने बैतूल मुकद्दस, दमिश्क, वैरूत, बगदाद, नजफ अशरफ, कर्बला मौअल्ला, ईरान, कुस्तुनतुनिया, मुल्के शाम, तुर्की, जर्मनी, और रूस, का सफर तय किया इस दौरान आपकी मुलाकात वेशुमार लोगों से हुई कुस्तुनतुनिया के सुल्तान अब्दुल मजीद ने आपके हाथ पर बैत की जर्मनी के दौरे पर शहजादा बिस्मार्क के मेहमान रहे कहा जाता है कि इस दौरान आपने 10 मर्तबा हज बैतुल्लाह की साआदत फरमाई हजरत वारिस ए पंजतन अशरफ उल आलमीन हजरत वारिस अली शाह रजिअल्लाह ताआला अनु जब अजमेर शरीफ ख्वाजा गरीब नवाज के मजार अकदस पर हाजिरी देने जा रहे थे

तो एक शख्स ने आपको जूते (खड़ाऊ) पहन कर अंदर
 जाने से रोक दिया उस दिन के बाद से सरकार वारिस ए
 पाक ने कभी जूता (खड़ाऊ) नहीं पहना हज़रत वारिस
 अली शाह रजिअल्लाहु ताआला अन्हु ने सारी ज़िन्दगी
 एक ही है अहराम जेवतन किया रखा
 एक तबील अरसा के बाद सरकार आलम नवाज
 वारिस ए पाक जब अपने वतन वापस आए तो अपने
 अजीज अकरवा की बेरुखी का सामना करना पड़ा जो
 आपके माल औ अस्वाब पर काबिज हो गए थे आपने
 दरगुजर से काम लिया और अपने वतन को खेरवाद
 कहकर एक बार फिर सफर को निकल पड़े जंगलों
 बियाबान और पहाड़ों में घूमते रहे अल्लाह की कुदरत
 का मुशायदा और उस पर गौर फिक्र करते रहे

हजरत वारिस अली शाह रजिअल्लाहु ताआला अन्हु
 को दुनियावी आशाइशों लज्जतों की कोई ख्वाहिश
 नहीं थी आप साजो सामान दौलत हर चीज से
 वेनियाज थे आपने सारी उम्र शादी नहीं की आपकी
 खुराक बराय नाम थी आप सब्र और शुक्र के पैकर थे
 सादगी आपकी जात में रची बची हुई थी
 सरकार वारिस पाक पहली मर्तबा वहरी जहाज से
 हज के लिए रवाना हुए माल असबाब कुछ ना था
 अल्लाह रब्बुल इज्जत पर बेपनाह यकीन ए कामिल
 था सरकार वारसी पाक रजिअल्लाहु ताआला अन्हु
 समुद्री जहाज पर हज के लिए रवाना हुए तो कई
 रोज तक आपको फाका कशी करनी पड़ी...

फांका कसी करनी पड़ी वहरी जहाज अपनी मंजिल
 के जानिब रवां दमा जा रहा था कि एकाएक चलते
 चलते बीच समंदर में रुक गया जहाज का कप्तान
 मुसलमान था उसे हालत ए ख्वाब में सरबर ए कौनैन
 سल्लल्लाहु अलैहि व वसल्लम की ज्यारत हुई रसूले
 करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया लोग
 भूखे हैं तुम शैर हो के खाते हो यह उसी बात का
 बवाल है नींद से बेदार होने पर कप्तान को फिक्र हुई
 लिहाजा उसने तमाम मुसाफिरों के खाने का इंतजाम
 किया और सब को खाना खिलाया सभी मुसाफिर
 खाने में शिरकत हुए पर सरकार वारिस ए पाक ने
 शिरकत ना की जहाज के कप्तान को दोबारा वही
 ख्वाब फिर नजर आया

कप्तान ने एक बार फिर सब की दावत की लेकिन सरकार वारिस पाक इस मर्तबा भी शरीक ना हुए तीसरी मर्तबा फिर वही ख्वाब देखा हुजूर करीम सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम की जियारत हुई और वही अल्फाज फिर आपने फरमाए कप्तान ने अबकी बार एक तरफ से रजिस्टर लेकर गिनती करना शुरू किया तो उसमें एक मुसाफिर कम हुआ उस मिसाफिर को तलाश किया गया तलास करने के बाद सरकार वारिस ए पाक की ज्यारत हुई और आपको खाना पेश किया गया सरकार वारिस ए पाक ने खाना खाया वैसे ही जहाज चल दिया अल्लाहू अकबर

एक मर्तबा सरकार वारिस ए पाक बहराइच की सफर
 पर थे आपके साथ आपके मुरीद भी थे कि रास्ते में
 दरिया ए घागरा पड़ा सरकार वारिस पाक दरिया को
 उबूर करना चाहते थे मगर दरिया में तुगयानी थी कोई
 कश्ती भी दस्तेयाब ना थी सरकार वारिस ए पाक ने
 फैसला किया मैं और मेरे मुरीद दरिया को तैरकर पार
 करेंगे आप के इस फैसले से आपके मुरीद खौफजदा
 व परेशान थे मगर वह सब दरिया में उतरे तो देख
 कर हैरानगी की इंतहा न रही दरिया का पानी आपके
 घुटनों तक था और सब ने व आसानी दरिया पार कर
 लिया अल्लाह हू अकबर क्या शान है सरकार आलम
 पनाह वारिस की अल्लाहु अकबर

हजारों हिन्दु साधु वारिस अली शाह के अकीदत मंद थे आपके जमाने में एक अंग्रेजी तबका आपके मुतद्कीन में था सरकार वारिस ए पाक पहले सूफी दरवेश थे। जिन्होंने समंदर के जरिए यूरोप का दौरा किया आप की शान का यह आलम था आपके चाहने वाले बड़ी दूर से आपकी ज्यारत के लिए आते थे एक आपका मुरीद स्पेन से देवा शरीफ आया और आपके हाथ पर बैत की सन 1905 ई० को आपने अपने मुरीदों से फरमाया कि हम कल सुबह 4:00 बजे रवाना हो जाएंगे 1905 ई० 7 अप्रैल वाज रिवायत में 12 अप्रैल को सुबह 4:13 बजे इस दुनिया ए फानी से कूज फरमाया आप का मजार अकदस भारत के शहर लखनऊ बाराबंकी के पास देवा शरीफ मैं क्याम है

देवा के सुल्तान आली बकार सैय्यद हजरत वारिस ए आलम
नबाज रजिअल्लाहु तआला का और आपके मुरीद उर्दू के
मशहूर शायर हजरत बेनजीर शाह वारसी रह° का बाक्या
हजरत बेनजीर शाह वारसी को किमीयां गीरी करने का बहुत
शौक था यानि धातु को सोने मे तबदील करने का बहुत शौक
व लगन थी

हर बख्त सोना बनाने के चक्कर मे लगे रहते थे
एक सफर के दौरान सरकार वारिस पाक एक बाग में आराम
फरमा हुये और साथ में बेनजीर शाह वारसी भी थे
सरकार वारिस पाक ने फरमाया ए बेनजीर तुमको सोना
बनाने की बहुत लगन है

यह बात बेनजीर शाह वारसी ने सुनी तो कहा जी हाँ सरकार
हमको बहुत शौक है सरकार वारिस पाक ने फरमाया की
जाओ बेनजीर बाग की खन्दक में जो घास लगी है उसको
लेकर आओ

बेनज़ीर शाह वारसी झट पट गये और बो घास लेकर आ गये

सरकार वारिस पाक ने फरमाया की ताँबे के पैसे घास में तर करो और आंगारों पे तपा लो फिर देखो खुदा की कुदरत बेनज़ीर शाह वारसी ने जैसे ही अमल किया सभी ताँबे के पैसे सोने में तबदील हो गये*

बेनज़ीर शाह वारसी का खुशी के मारे ठिकाना न था उम्र भर की जुशतजु का गौहर मिल गया बेनज़ीर शाह वारसी उस घास को वो आँखे फाड़ फाड़ के देखते थे और सोचते थे की बाद में बहुत सारी घास उखाड़ ले जायेंगे और ढेर सारा सोना बनायेंगे

आराम करने के बाद सरकार हिरली तसरीफ ले गये बहाँ आपक आमद की खबर हुई तो एक बुढ़िया रोती हुई खिदमत मे हाजिर हुई और कहा

सरकार कल मेरी नवासीयों की शादी है पैसे पास नहीं
 बरातीयों को क्या मुँह दिखाऊँगी
 सरकार ने उसे तसल्ली देते हुये
 बेनज़ीर से फरमाया की वो सोना बड़ी बी को दे दो जो तुमने
 कल बनाया था

यह सुनकर बेनज़ीर को बड़ा गम हुआ फिर सोचा की घास
 बहाँ मौजूद है फिर से सोना बना लूंगा यह सोच कर वो सोना
 बड़ी बी को दे दिया सरकार मुस्कुराने लगे अल्लाहु अकबर
 बापसी में सरकार उसी बाग में आराम फरमा हो गये
 बेनज़ीर मौका ए गनीमत जान कर झट पट उसी खन्दक में
 गये और सोचा बहुत सी घास उखाड़ लें
 जब बहाँ देखा तो उस जगह बंजर जमीन थी घास का नाम
 निशान न था यह देख कर बेनज़ीर गमजदा हुये और मुँह
 लटकाये बापस आ गये

सरकार वारिस पाक ने देखा और मुस्कुराने लगे और फरमाया
 बेनज़ीर घास मिली किमीयां बनी
 बेनज़ीर थके हुये लहजे मे भोले सरकार न घास मिली न
 किमीयां बनी
 बेनज़ीर सहाब को मायूस देखकर सरकार ने सफक्त से
 समझाया
 बेनज़ीर तुम भी कितने भोले हो भला घास से सोना बनता है
 हाँ खुदा चाहे तो घास से सोना बन जाये तो क्यों न उस खुदा की
 इबादत करें और खुद सोना बन जायें
 सरकार वारिस पाक की यह बात बेनजीर के दिल मे तीर की
 तरह पेबस्त हो गई
 दौलत ए दुनियाँ से दिल बेजार हो गया और इश्क ए ईलाही मे
 मशगूल हो गये और और सोना बनाने की लत भी छूट गई और
 आप खुद सोना कुंदन बन गये
 अल्लाहु अकबर

नाजरीन यह है मेरे वारिस पिया की शान जो निगाह
ए करम से और अल्लाह की रहमत से धास और
ताँबा सोने मे तबदील हो गया सरकार अशरफुल
आलमीन सरकार आलम नवाज वारिस ए पाक
आजमअल्लाहु जिकरहु रजिअल्लाहु तआला अन्हु
की शान निराली है



आफताब-ए-औलिया पेज न°120,122

आलम पनाह हाजी वारिस अली शाह आजमअल्लाहु जिकरहु और
एक जादूगर

वारिस ए पंजतन सुल्तान आली बकार हजरत वारिस ए पाक
रजिअल्लाहु तआला अन्हु की शान

एक मर्तबा सरदार अली सहाब साबरी लखनऊ के एक कॉलेज में
तालिबे इल्म थे वह बयान करते हैं की मुझे तुर्की जुबान सिखने का
शैक पैदा हुआ

उस दौर मै मौलाना काजिम अली सहाब बहुत ही मशहूर मजहरे इल्म
तुर्की जुबान के आलिम थे

बह अपने आस पास किसी को फटकने नहीं देते थे

और अकेले तन्हाई मे रहते और कभी कभी जोर जोर से या वारिस
हक वारिस का नारा लागने लगते और कभी-कभी आँखे नम हो
जाती

कई महीनों की जद्दोजहद में* *मौलाना काजिम अली सहाब को मना
लिया और तुर्की जुबान सिखने लगे

मौलाना सहाब ऊपर से सख्त थे अन्दर से बहुत ही निहायत रहम
दिल थे

वारिस पाक से बहुत अकीदत रखते थे
 सरदार अली सहाब कहते हैं हमने एक दिन पूँछ लिया आपके
 खानदान के लौग बहुत कडक सिया हैं तो आप वारिस पाक से
 इतनी अकीदत क्यों रखते हो
 मौलाना ने पहले बात टालने की कोशिश की बहुत इसरार के
 बाद अपनी आप बीती सुनाई
 मैं जब ऐनख्वानी के आलम मे फारसी दीनी और तमाम इल्म
 हासिल कर रहा था तब मुझे एक हसीन तबायफ से मौहब्बत
 हो गई और उसके इश्क मे सब कुछ घर बार लुटा दिया
 जब कुछ पास न रहा उस हसीन तबायफ को हासिल करने के
 चक्कर मे आलिम और जादूगर के चक्कर में पड़ गये लेकिन
 मतलूब हासिल न हुआ
 फिर मौलाना सहाब जादू सिखने के लिए बंगाल चले गये
 बंगाल का जादू मशहूर था

7 साल मुशलसल जंगलों में बने रहे और माहिर जादूगर बन गये

इस दौरान बह सब कुछ भूल चुके थे कलमा तक भूल गये
गन्दगी बगैरा खाते शैतानी फितरत हो गई दी आपकी गोया
पक्के जादूगर बन गये थे

जब बह बापस लखनऊ आये तब तक वह हसीन तबायफ मर
चुकी थी जिसके लिये सब कुछ लुटा दिया था और जादूगर
बन गये

यह देखकर बह दिबाने बन गये गली कूचों में मारे मारे घुमने
लगे

एक गन्दा सा झोला साथ और सामना वारिस ए पाक से
हो गया दोपहर का टाईम था सरकार हाजी वारिस पाक
रजिअल्लाहु तआला अन्हु दोनो हाथों से घुटनों का हल्का
किये हुये जमीन पर पर व हालत मुरगबा रैनक अफरोज थे

बगैरलिये रहते थे जिस मे जादू का सामान रहता दिन गुजरते गये

खुदा का करना ऐसा हुआ

एक दिन उनका गुजर देवाशरीफ से हुआ नजर उठाए वारिस
ए पाक ने फरमाया कौन है

मौलाना ने कहा मैं हूँ जादूगर

यह सुनकर सरकार ने आँखे खोल दी और कहा कैसे जादूगर
मौलाना ने कहा बहुत बड़ा जादूगर हूँ सरकार ने कहा बहुत बड़े
जादूगर हो तो दिखाओ कुछ जादू

वहीं से एक भैंस गुजर रही थी

जादूगर ने ऊस भैंस पर जादू किया बह गिर पड़ी और मुँह से
खून निकलने लगा

सरकार बेजार हो गये और कहा यह जुल्म है इसे ठीक करो
मौलाना ने जादू बापस ले लिया भैंस कमजोरी की हालत में
उठी और चली गई

सरकार आली बकार हजरत वारिस ए पाक जलाल के आलम मे आ
 चुके थे आपने फरमाया मुझ पर जादू करो
 मौलाना भी जादू के जौश मे थे
 मौलाना ने एक हाथ पर जादू किया बेअसर हुआ
 सरकार ने फरमाया कैसे जादूगर हो
 मुझ पर जादू क्यों नही करते
 मौलाना ने आपके तमाम आजहा पर जादू किया बेअसर साबित
 हुआ
 सरकार ने फरमाया कैसे जादूगर हो मुझ पर जादू क्यों नही करते हो
 सरकार बार बार यही कह रहे थे
 मौलाना का जादू बेअसर हो रहा था
 मौलाना ने आपके कल्ब पर बहुत शदीद बार किया लेकिन
 आचानक एक तजल्लीदार रौशनी नमुदार हुई जिससे मौलाना पर
 हैबत तारी हुई आँखे चकाचौंध होगई
 अभी एक मरहला बाकी था

मौलाना ने कहा की मैं आपकी आँखों पर बार करना चहाता हूँ

सरकार वारिस पाक ने कहा इजाजत है
 मौलाना सहाब का बयान है मैंने अपनी सात साल के रियाज का बहुत सख्त तरीन बार आपकी आँखों पर किया लेकिन बेअसर साबित हुआ

सरकार आली बकार हजरत वारिस ए पाक ने फरमाया कैसे जादूगर हो मुझ पर जादू क्यों नहीं करते हो
 और आप उस जादूगर को अपनी निगाहों से देखने लगे जैसे ही आपने देखा तो अजीब कैफियत हुई जादूगर की मौलाना सहाब कहते हैं सरकार की नजर जब पड़ी तो दिल की दुनियाँ बदलने लगी
 और आँखों के सामने अंधेरा सा छा गया और बेहोश हो कर गिर गया जब आँख खुली तो सरकार के कदमों में पड़ा था और बच्चों की तरह रो रहा था

सरकार पीट पर हाथ फेर रहे थे
 आपने कलमा पढ़ाया और मगरीब का टाईम हो गया था
 आपने कहा जाओ गुसल करो और नमाज अदा करो जादू
 बुरी चीज है
 उस दिन नमाज में बड़ा लुत्फ आया
 फिर सरकार वारिस पाक के हाथ पर बैत हो गया फिर मै
 जादू भी भूल गया
 यह बाक्या जो सुन रहे थे मौलाना सहाब से इजहार ए
 मजाक में पूँछ लिया की आपको उनकी याद आती है
 जिनको उस्तादनी बनाने के लिये सब कुछ लुटा दिया था
 मौलाना सहाब ने कहा की सरकार वारिस पाक की निगाह
 में बह तासीर थी की मुझे सब कुछ मिल गया कोई हसरथ
 ही नहीं रही
 سُبْحَانَ اللَّهِ

नाजरीन इकराम यह है मेरे सरकार आली बकार हजरत वारिस ए पाक रजिअल्लाहु तआला अन्हु की शान आपकी निगाह का आलम यह था की जिस पर आप नजर ए करम कर दें वह ईमान से माला माल हो जाये

यह होती है इश्क की तासीर जब इश्क हो जाता है तब मासूक के सिबा कुछ नहीं दिखता है और गुनाह से पाक हो जाता है उठते बैठते

या वारिस हक वारिस बोलते हैं इश्क बाले
आपकी बेशुमार करामातें हैं जाहिर है
अल्लाहु अकबर

इसी बात पर मूझे एक मौजू शेर याद आ गया...

"निगाहे वली में वो तासीर देखी,,
*"कि बदलती हजारों की तकदीर देखी,,



सरकार वारिस ए पाक रजिअल्लाहु तआला अन्हु ने
दुनिया से कभी मोहब्बत ना कि आप दिन में रोजा
रखते रात में अल्लाह की इबादत करते दिन-रात जिक्र
ए इलाही में रहते और अपना काम खुद करते किसी
से कुछ ना कहते तकलीफ ना देते किसी को हमाबख्त
अल्लाह की इबादत में रहते*

एक रोज का जिक्र है सरकार वारिस पाक अपने मुरीद
फैजू शाह रह० के साथ गंगा नदी के किनारे तसरीफ
ले गए गंगा नदी उस वक्त बड़ी जोश में थी और उसका
पानी बड़ी उफान पर था बरसात का मौसम था चारों
तरफ हरियाली ही हरियाली थी सरकार अपने मुरीद के
साथ जब गंगा तट पर हाजिर हुए जैसा कि मैंने बताया
कि सरकार वारिस ए पाक अपना काम खुद करते थे

आपने अपना अहराम लिया और धोने का इरादा किया आप
 अपने अहराम को धोने के लिए ही गंगा नदी के तट पर आए
 थे आपने अपने गुलाम फैजू शाह रह० से फरमाया जाओ
 धोबिया वाला पत्थर ढूँढ कर लाओ जिस पर धोबी कपड़े धोते
 हैं हमें अपना अहराम धोना है हजरत फैजू सा यह फरमान
 सुनकर हैरान हुए और फरमाया हुजूर यहां तो कोई पत्थर नहीं
 है चारों तरफ पानी ही पानी है पत्थर तो गंगा नदी के अंदर
 होगा उसके अंदर कैसे जाएं उसमें जो जाता है वह डूब जाता
 है नदी अभी बहुत वहाव पर है कितना भी बड़ा पैराने वाला हो
 वह भी डूब जाएगा हुजूर पत्थर निकालना मुश्किल है सरकार
 वारिस ए पाक मुस्कुराने लगे और फरमाया तो यह काम कोई
 मुद्दा ही करे जब जिंदा नहीं कर सकता ताकि उसे जान का
 खतरा ना हो आपके गुलाम हजरत फैजू शाह रह० आपको
 बड़ी हैरानी से देखने लगे

और कहा हुजूर हम समझे नहीं इतने में ही फैजू शाह
क्या देखते हैं की गंगा नदी में एक मुर्दा बहता हुआ आ
रहा है फैजू शाह सोचने लगे कि अभी सरकार ने मुर्दे
का जिक्र किया और मुर्दा बहता हुआ हाजिर हो गया*

*सरकार ने मुर्दे की तरफ इशारा किया अल्लाह के हुक्म
से तो वह मुर्दा बहता हुआ किनारे आ पहुंचा सरकार
वारिस ए पाक ने उस मुर्दे से कहा ए मुर्दे जा वह पत्थर
लेकर आ जिस पर धोबी कपड़ा धोता है*

*नाज़नीन इकराम सरकार वारिस पाक के इस हुक्म
से मुर्दा जिंदा हो गया और पानी में गोता लगा दिया यह
देखकर सरकार वारिस ए पाक के गुलाम हजरत फैजू
शाह सोचने लगे यह क्या माजरा है सरकार कौन-सी
करामात का जरूर कर रहे हैं अल्लाह ही जाने देखते
क्या है

वह मुर्दा पानी से बाहर निकला एक बड़ा सा पत्थर
 सिल्ली लिए हुए जिस पर धोबी कपड़ा धोता है वारिस
 पाक ने जब उस मुर्दे को पत्थर लिए देखा तो फरमाया
 इसको किनारे पर लेकर आओ तो वह मुर्दा किनारे पर
 आ गया हजरत फैजू शाह बहुत हैरान थे कभी उस
 मुर्दे की तरफ देख रहे कभी इस पत्थर की तरफ और
 सरकार अपने अहराम धोने में मशगूल थे
 जैसे ही आपका अहराम धूल गया और हवा में सुखाने
 लगे तो सरकार ने फैजू शाह की तरफ देखा और
 फरमाया ए फैजू क्या हैरानी से सोच रहे हो जब कोई
 काम जिंदा ना कर पाए तो अल्लाह ताआला मुर्दे से भी
 अपना काम ले लेता है वह हर शह पर कादिर है

बड़ी शान वाला है पाक परवरदिगार है हमारी खातिर
 अल्लाह ताआला कैसे-कैसे करिश्मे दिखाता है हम
 क्या हैं हम तो कुछ भी नहीं है
 सरकार वारिस पाक फिर उस मुर्दे की तरफ मुखातिब
 हुए और फरमाया तुम जहां जाना चाहते हो जाओ चाहे
 जंगल की शैर करो या अपने घर जाओ आज से तुम्हें
 नई जिंदगी अल्लाह ताला ने वक्श दी है
 سُبْحَانَ اللَّهِ
 उसके बाद वह मुर्दा शख्स आपका हुकुम पाते ही वहां
 से रवाना हो गया

आफताब ए बिलायत हजरत वारिस ए पाक की विलायत की इये तासीर थी कि आप रजिअल्लाहु तआला अन्हु जिस बस्ती में जाते उस बस्ती के लोग बच्चे तक आपकी तरफ खींचे चले आते आप रजिअल्लाहु तआला अन्हु किसी को दबा ना देते अपने नजरे करम से शिफा अता फरमा देते आपकी जुबान फैज ए तरजुबान में तासीर ए मसीहाई थी

एक मर्तबा आप चंद्रगढ़ जलवा अफरोज हुए तो वहाँ एक शख्स कचरा उठाने वाला खाकरू बड़ी अकीदत से हजरत वारिस ए पाक की खिदमत में हाजिर हुआ मगर वह शख्स दूर ही से सलाम अर्ज करके आहोजारी करने लगा उसे जुजाम का मर्ज लाहक था यानी कोण की बीमारी थी इसीलिए वह करीब ना आता था और दूर खड़ा रोता चिल्लाता रहता था

वह सरकार वारिस ए पाक से कहने लगा हुजूर अब मेरा
हाथ कौन पकड़ेगा सबके मौला तो आप ठहरे लेकिन मुझे
कौन कबूल करेगा वह शख्स दो दिन इसी तरह तड़पता
रहा आखिर में सरकार वारिस पाक का दरिया ए रहमत
जोश में आ गया मुस्तरी होकर आपने फरमाया मैं तुझे
अपनी आंखों के जरिए मुरीद करता हूं मुझे तू अच्छी तरह
देख ले यह कहकर आपने अपना रूखे रौशन उसकी तरफ
किया चुनांचे अल्लाह ताआला ने ऐसी मसीहाई दिखाई
आपकी एक नजर से वह सेहतियब हो गया यानी बिल्कुल
ठीक हो गया देखते ही देखते उसे जो बीमारी थी वह ठीक
हो गई और उसके जख्म भी भर गए

"उसने उस बीमारी से निजात पाई मुफ्त में दौलत ए दारैन
हांथ आई,,

सेहतियाब होकर जोश के आलम की मस्ती में सरकार वारिस
ए पाक के कदमों में लोट गया और यह मंजर भी काबिले दीद
था

"निगाहें वली में वह तासीर देखी,,
"बदलते हजारों की तकदीर देखी,,

नजरीन ए किराम यह है शान है औलिया अल्लाह की
इये सान है आफताब ए बिलायत सरकार वारिस ए पाक
रजिअल्लाहु तआला अन्हु की जिनको लोग आफताब ए
विलायत के नाम से जानते हैं सरकार वारिस ए पाक की
जिंदगी का हर एक वाक्या करामात से बढ़कर है आपने दीन
की तबलीग को सर अंजाम दिया आपने लोगों को करामात
और करिश्मा के जरिए ईमान की जिंदगी बख्शी

सरकार वारिस पाक को समझना मुहाल है आप की शान बयान
 करना मुहाल है आपको अल्लाह तबारक ताला ने बो जलवे
 अता फरमाए जिन को बयां नहीं किया जा सकता जिसको जो
 समझ में आया वह समझा सरकार ने मौला अली मुश्किल
 कुशा बाबा बन कर दिखाया सरकार ने सैयदा कायनात हजरत
 बीबी फातिमा जहरा سलामुल्लाह अलैहा बन कर दिखाया जो
 जिस को मानता था आपने उसी को उसी के मानने वाले के रूप
 में बन कर दिखाया अल्लाह हू अकबर क्या लिखूं सरकार की
 शान वाया नहीं की जा सकती समझने वाले समझते हैं
 अल्लाह ही जानता है औलादे नबी औलादे अली नवासे हुसैन
 हजरत वारिस ए पाक की शान आपकी हर शैय है गुलाम
 *नाजरीन इकराम आफताब ए विलायत हजरत वारिस ए पाक
 रजिअल्लाहु तआला अन्हु की निगाह में वो तासीर थी कि
 जिसके ऊपर भी आप उठा देते थे उसकी बिगड़ी बन जाया
 करती है

आफताब विलायत हजरत वारिस ए पाक रजिअल्लाहु
 तआला अन्हु की विलादत से एक मुद्दत पहले बांस
 शरीफ में अपने वक्त के कुतुबुल अफताब हजरत अब्दुर
 रज्जाक शाह बांसवी रह० देवा शरीफ की तरफ रुख
 कर के दुआ मांगा करते थे और फरमाते थे इधर से
 आफताब ए विलायत तुलू होगा जिसकी रोशनी से
 दुनिया जगमगाएगी

सरकार वारिस ए पाक के बचपन से ही करामातों का
 जहूर शुरू हो गया था आप बचपन से ही सखावत के
 धनी थे बड़े रहम दिल बुजुर्ग थे

एक मर्तबा सरकार वारिस पाक ताईफ के नकुलस्तां से
 गुजर रहे थे तो आपने देखा एक ऊंट मजनू हो गया है
 पागल हो गया है ऊंट का मालिक बड़ा परेशान नजर आ
 रहा था उसके आंख से आंसू टपक रहे थे

क्योंकि लोग उसे ही कोसते थे ऊंट सब का नुकसान करता था वह इस बात से बड़ा परेशान था और वहां के तमाम लोग परेशान थे क्योंकि उनका नुकसान भी हो जाता था* जब हजरत वारिस ए पाक की मुलाकात उस ऊंट के मालिक से हुई तो ऊंट के मालिक ने अपनी सारी परेशानी हजरत वारिस ए पाक को बयान कर दी उस ऊंट के मालिक की सारी बातें सरकार वारिस पाक ने सुनी फिर सरकार वारिस ए पाक ने फरमाया मुझे उस ऊंट के पास ले चलो उस ऊंट के मालिक ने कहा हुजूर आप ऊंट के पास ना जाएं वह मजनू ऊंट है पागल ऊंट है आप यहीं से दुआ कर दीजिए

सरकार वारिस पाक ने फरमाया हमें उस ऊंट के पास चलना होगा तभी वह सही होगा वह शख्स हजरत वारिस ए पाक को बड़ी हैरानी से देखने लगा और सोचने लगा यह हजरत भी पता नहीं क्या चाहते हैं

उस पागल ऊंट के पास क्यों जाना चाहते हैं वह सरकार
की हिक्मत की बातों से वाकिफ ना था सरकार के दो तीन
मर्तबा बोलने के बाद वह मजबूरन सरकार को ऊंट के पास
ले गया*

वह ऊंट अभी भी पगलाया हुआ ही था और इधर उधर
घूम रहा था लोगों का नुकसान कर रहा था सरकार वारिस
पाक ऊंट के पास पहुंचे आपने बबूल की एक डंगार ली
और आपने उस ऊंट के पेशानी पर वार किया अल्लाह
का करम देखिए ऊंट बौखला भी सकता था लेकिन यह
सरकार वारिस ए पाक की शान व करामात है आपने एक
बार किया वह ऊंट एकदम शांत हो गया और एक जगह
खड़ा हो गया सरकार वारिस ए पाक के सामने ही वह
अदब से झुक कर बैठ गया

*सुब्हानअल्लाह

नाजरीन ए किराम यह होती है औलिया
 अल्लाह की करामात आप की शान औलिया
 अल्लाह अगर चाहे तो जानवरों को भी काबू
 में कर देते हैं इंसान तो इंसान जानवरों पर भी
 औलिया अल्लाह का इतना रोब व दबदबा
 होता है जानवर भी उनसे डरते हैं और उनका
 खौफ करते हैं

सुबहानअल्लाह

या वारिस _____ हक वारिस

आलम पनांह वारिस

या अल्लाह लिखने में जो भी गलती हुई हो माफ

फारमा

सरकार इये हदीया कुबूल फारमाए

और नजरे करम फरमाएं

सुना सुना मौहब्बत करो मौहब्बत

मौहब्बत खुदा ए पाक तक पहुंचा देती है

या हुसैन या वारिस अल मदद

दरगाह हजरत सिद्दीक शाह वारसी रह०

या वारिस _____ हक वारिस

सुल्तान वारिस

वारसी